थर्डहैंड धूम्रपान भी घातक है

डॉ. अरविन्द गुप्ते

धूम्रपान के हानिकारक परिणामों पर इतना शोधकार्य हो चुका है कि अब इसमें कोई शक नहीं रह गया है कि धूम्रपान न केवल फेफड़ों और श्वसन तंत्र के लिए हानिकारक है, बल्कि इससे शरीर के लगभग सारे तंत्र प्रभावित होते हैं। अभी तक जिन दो प्रकार के धूम्रपान की चर्चा होती थी वे हैं फर्स्टहैंड स्मोकिंग यानी बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, पाइप वगैरह के ज़रिए तंबाकू के धुंए को शरीर में लेना। दूसरा प्रकार है सेकंडहैंड स्मोकिंग जिसमें खुद धूम्रपान नहीं करते हैं बल्कि धूम्रपान करने वालों के करीब रहने पर सांस के साथ तंबाकू का धुआं शरीर में जाता है। धूम्रपान न करने वालों के लिए सेकंडहैंड स्मोकिंग काफी खतरनाक होता है। किंतु पिछले दिनों हुए शोधकार्य से धूम्रपान का तीसरा और अधिक खतरनाक प्रकार यानी थर्डहैंड स्मोकिंग सामने आया है। इसका विवरण *अमेरिकन नेशनल एकेडेमी ऑफ साइंसेस* की *पत्रिका* में प्रकाशित हुआ है।

बात यह है कि तंबाकू के धुएं में 600 प्रकार के हानिकारक रसायन होते हैं जिनमें सबसे खतरनाक रसायनों में एक है टोबेको-स्पेसिफिक नाइट्रोसामिन जिसका संक्षिप्त नाम टीएनएसए है। जब हम किसी धूम्रपान करने वाले के पास जाते हैं या उसके घर जाते हैं तो हम पाते हैं कि उसके कपड़ों, घर की दीवारों, कार की सीट, आदि से तंबाकू के धुएं की गंध आ रही है। तंबाकू के धुएं में मौजूद निकोटिन कपड़ों, दीवारों, आदि पर चिपक जाती है। जब यह निकोटिन हवा में उपस्थित नाइट्रस ऑक्साइड के सम्पर्क में आती है तब एक रासायनिक अभिक्रिया होती है और टीएनएसए बन जाता है। एलपीजी, पेट्रोल, डीज़ल, आदि के जलने से नाइट्रस ऑक्साइड बनती है और इसलिए यह वातावरण में काफी मात्रा में पाई जाती है। इस प्रकार बना हुआ टीएनएसए बहुत हानिकारक होता है, विशेष रूप से बच्चों के लिए। चूंकि निकोटिन लंबे समय तक किसी भी सतह से चिपकी रहती है, इसलिए थर्डहैंड धूम्रपान सेकंडहैंड धूम्रपान की अपेक्षा अधिक खतरनाक होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***